मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

माह : अक्टूबर 2025

संकलन - मिशन शिक्षण संवाद बाल साहित्य सृजन टीम

बाल साहित्य सृजन

1 सफेद हंस

सफेद हंस सरोवर मे रहता,
कितना सुन्दर प्यारा लगता।
सबके मन को खूब हर्षाता,
सुन्दर पंखो से खूब लुभाता।।

यह पतली सुन्दर गर्दन वाला होता,
जीवनभर एक साथी के साथ रहता।
इसका स्वभाव बहुत ही शांत होता,
अपने परिवार के लिए समर्पित रहता।।

रचना
इला सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय
पनेरूवा, अमौली, फतेहपुर

2 सुरीली कोयल

काली काली कोयल प्यारी,
है वह तो सबसे न्यारी।
सुरीली बोली बोलती है,
सबके मन को मोहती है।।

पेड़ पर आकर बैठती है,
कुकू कर कर बोलती है।
जब भी उसको सुनती हूं,
मैं भी कुकू करने लगती हूं।।

रचना
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,मेरठ

3 मिट्ठू तोता

हरे रंग का यह होता,
मिर्ची चाव से खाता।
मेरा प्यारा मिट्ठू तोता,
सबके मन को भाता।।

प्यारी-प्यारी बातें करता,
हमारी नकल भी उतारता।
कंधे पर भी बैठ जाता,
शैतानी फिर खूब करता।।

रचना
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा,कानपुर देहात

4 बातूनी मैना

गाँव में खबर चारों ओर,
मैना रानी पकड़ेंगी चोर।
फुर्र-फुर्र आकाश में उड़ती,
बड़ी गजब की इसकी फूर्ति।।

चोरों की तो शामत है आई,
मैना जब पुलिस साथ लाई।
चोर पकड़े कान करें दुहाई।
बातूनी मैना से बचाओ भाई।।

रचना
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ०प्रा०वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

03/10/2025 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 उल्लू

दिन में सोए रात को जागे,
रोशनी देखकर है घबराता।
जिसको हमसब कहते उल्लू
अन्धकार ही उसे सुहाता।।

पेड़ पे बैठा बोलता है कम,
बड़ी आँखों से देखता उल्लू।
बुद्धि, धन, समृद्धि का प्रतीक,
लक्ष्मी जी का वाहन उल्लू।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2 कबूतर

कुछ नीले, कुछ बैंगनी,
सफेद-सफेद से कबूतर।
गुटरगुं -गुटरगुं आवाज,
वाले ये प्यारे कबूतर।।

अपनी चोंच से दाना चुगते,
कूद-कूद कर चलते हैं।
शान्ति के प्रतीक ये होते,
हमारे घरों में पलते हैं।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3 तोता

हरे रंग का प्यारा तोता,
मिट्ठू-मिट्ठू चिल्लाता है।
भूख लगे तो कुतर-कुतर,
ताजे फलों को खाता है।।

पक्षियों में सुन्दर पक्षी,
तोता कहलाता है।
लाल चोंच होती मिट्ठू की,
हरी मिर्च भी खाता है।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4 कोयल

कुहू-कुहू से मन मोहती,
मधुर धुन में गाना गाती।
बसंत के मौसम में आकर,
मीठी बोली से मन बहलाती।।

हरियाली में करती बसेरा,
मधुर आवाज से होता सवेरा।
प्रकृति का सौंदर्य बयां करती,
कोयल सबको प्रसन्न करती।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

04/10/2025 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1 नीलकंठ

नीले कंठ का रंगीन पक्षी,
भारतीय रोलर नीलकंठ।
कार्डेटा संघ का है पक्षी,
एशिया,अफ्रीका,यूरोप तक।।
विषैले सांप, बिच्छू खाता,
मैदान व झाड़ियों में रहता।
उड़ीसा,तमिलनाडु,कर्नाटक,
का राजकीय पक्षी कहलाता।।

रचना
सुमन पाण्डेय प्र.अ
प्रा.वि.टिकरी-मनौटी
खजुहा,फतेहपुर

2 मोर

प्रकृति का अनमोल रत्न है,
भारत का है गर्व महान।
पंखों में है दिखे एकता,
जैसे भारत की पहचान।।
मोर हमारा प्यारा साथी,
प्रकृति का सुन्दर उपहार।
उसके पंखों में बसता है,
भारत का सच्चा संसार।।

रचना
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी (1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

3 हंस

लंबी गर्दन बड़ा आकार,
श्वेत रंग, तैरे शानदार।।
जलीय पक्षी सुंदर रूप,
ज्ञान,विवेक संगम अनूप।।
कुछ को भाए प्रवासी जीवन,
नीर क्षीर, मां सरस्वती का वाहन।
लम्बी दूरी तय कर जाता,
अद्भुत इसकी पौराणिक गाथा।।

रचना
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
कंपोजिट वि० खजनी
(रुद्रपुर), गोरखपुर

4 कठफोड़वा

कठफोड़वा एक पक्षी है,
रंग-बिरंगी कलगी वाला पक्षी है।
आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी, न्यूजीलैंड,
ध्रुवीय क्षेत्रों में मिलता है पक्षी।।
पिसिनिया वैज्ञानिक नाम है,
वुडपेकर अंग्रेजी में नाम है।
चोंच मारता है पेड़ के तने में,
खाता है कीड़े पेड़ के तने से।।

रचना
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय अमौली
अमौली, फतेहपुर

06/10/2025

बाल साहित्य सृजन

सोमवार

1 तोता

हरे रंग का होता तोता,
चोंच होती उसकी लाल।
मिट्ठू-मिट्ठू कहते उसको,
खाता है वह चने की दाल।।

टिंऊँ-टिंऊँ वह करता है,
बच्चों को बहुत भाता है।
नकल उतारे वह सभी की,
बुद्धिमान पक्षी कहलाता है।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०- निवाड़ा
बागपत, बागपत

2 मोर

नीले-हरे पंखो वाला,
कहलाता है मोर।
सर्प को खा जाता है,
नाचे पंख फैला चहुँओर।।

भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर,
सबसे सुन्दर होता है।
शर्मीला होता है बहुत,
एकांत वास में रहता है।।

रचना-
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० कूँड़
करहल, मैनपुरी

3 सारस

सारस एक सामाजिक पक्षी,
जोड़ा एक ही बनाता है।
अंग्रेजी में कहते क्रेन,
संस्कृत में क्रौंच कहा जाता है।

यह विशाल उड़ने वाला,
उत्तर प्रदेश का राष्ट्रीय पक्षी।
संरक्षण करो इसका मिलकर,
नहीं तो हो जाएगा दुर्लभ पक्षी।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

4 हंस

हंस बड़ा ही प्यारा होता,
सदा यह जोड़े में है रहता।
माता सरस्वती का है वाहन,
श्वेत रंग का बड़ा है पावन।।

नीर-क्षीर का अन्तर करता,
लम्बी-लम्बी उड़ानें भरता।
अच्छाई का यह प्रतीक,
करता निर्णय बड़ा सटीक।।

रचना-
बृजराज सारस्वत(इं०प्र०अ०)
क० वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

07.10.2025 मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1 गौरैया

कितनी छोटी होती है यह,
कितनी प्यारी दिखती है।
सुन्दर-सुन्दर घोंसले बनाकर,
अपना घर बनाती है।।

चीं-चीं करती गौरैया,
जब मेरे घर पर आती है।
दाना-पानी खाकर,
दूर-तलक उड़ जाती है।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि०- राजपुर
मथुरा-मथुरा

2 बुलबुल

नन्हीं चिड़िया बुलबुल,
दिनभर करती कुलबुल।
पंख हैं भूरे काले,
छूलें तो रेशमवाले।।

फूलों पर आती-जाती,
फल, कीट, कीड़े खाती।
मन को मोह लेती है,
पर्यावरण को यह भाती।।

रचना-
प्रियंका गौतम (स०अ०)
संवि० वि० कन्या- एत्मादपुर
एत्मादपुर, आगरा

3 कौआ

काला-काला कौआ बोला,
मैं सबसे सुन्दर दिखता।
चोंच है मेरी बड़ी नुकीली,
आसमान में उड़ता, फिरता।।

तभी वहाँ एक कोयल बोली,
तेरी भाषा न किसी को भाये।
काँव-काँव तू करके बोले,
इसलिए तुझे सब दूर भगाये।।

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

4 मोर

पक्षियों में मन मोहने वाला,
प्यारा मोर हमें लगता।
'राष्ट्रीय-पक्षी' है मोर हमारा,
नाचे तो सुन्दर लगता।।

मोरपंख लगते अति प्यारे,
श्री कृष्ण सिर, मुकुट बिराजे।
पीहू-पीहू सुरीली बोली,
मोरनी आवाज सुन संग बोली।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

10/10/2025 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1

मोर

मैं हूँ पक्षियों का राजा मोर,
कुँह-कुँह का करता शोर,
सिर पर कलगी,आँखें छोटी,
मुड़ मुड़ देखें सब मेरी ओर।।

सावन में मैं खुश हो जाता,
बारिश में मैं नाच दिखाता,
सुन्दर रंग-बिरंगे पंख मेरे,
राष्ट्रीय पक्षी मैं कहलाता।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

चील

शक्तिशाली शिकारी पक्षी,
मांसाहारी चील कहलाता है ।
नुकीली चोंच वाला पक्षी,
बहुत तेज उड़ान भरता है।।

घास और मिट्टी लेकर,
बड़े-बड़े घोसलें बनाते हैं।
साहस और उत्कृष्टता से,
आगे बढ़ना सिखाते हैं।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3

कोयल

बागों में कोयल जब,
कुहू-कुहू गीत गाती है।
अपनी मीठी वाणी से,
सबके मन को हर्षाती है।

काली कोयल हम सबको
एक सन्देश सुनाती है।
मीठी वाणी मन के सारे,
राग द्वेष मिटाती है।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

मोर

रंग-बिरंगे सुनहरे पंख,
गाढ़ा हरा होता है रंग।
वर्षा के मौसम में मोर के,
उमड़ जाती है उमंग।।

नाचता पंख फैला कर,
सबका मन बहलाता है।
अपनी सुंदरता के कारण,
राष्ट्रीय पक्षी कहलाता है।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

11/10/2025 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1 सारस

उत्तर प्रदेश का राज्य पक्षी,
सारस संवेदनशील है पक्षी।
लाल सूची में ये है नामित,
प्रेम स्नेह का प्रतीक ये पक्षी।।

लम्बी गर्दन, लम्बी टांग,
स्लेटी विशाल होते हैं पर।
स्लेटी रंग की लम्बी चोंच,
संस्कृत में इसे कहते क्रोंच।।

रचना
सुमन पाण्डेय प्र.अ
प्रा.वि.टिकरी-मनौटी
खजुहा,फतेहपुर

2 मैना

स्टारलिंग परिवार का पक्षी है,
भूरे रंग वाला प्यारा पक्षी है।
ईरान, दक्षिण एशिया, भारत,
पाकिस्तान, श्री लंका का पक्षी है।।

कर्कश आवाज है इनकी,
चीख, सीटियाँ पहचान है इनकी।
खुशी से गीत भी गाती हैं,
नई ध्वनि की नकल भी करती हैं।।

रचना
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय अमौली
अमौली, फतेहपुर

3 कोयल

कोयल कूके डाली-डाली,
उसकी कूक की बात निराली।
बसंत में आती फूलों संग गाती,
जीवन का है राग सुनाती।।

कोयल है प्रकृति की सौगात,
उसके गीतों में सजता है राग।
कोयल की कूक में है विश्वास,
प्रकृति का हर रंग उससे है खास।।

रचना
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी (1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4 बगुला

सफेद पंख नदियों का तट
बगुला खाए मछली झट– पट।
चिड़िया प्रजाति का है जीव,
संयम और धैर्य का गुण सजीव।।

एक टांग पर ध्यान लगाए,
लक्ष्य केंद्रित साध्य लगाए।
बगुला जीव तो बहुत निराला,
सफेद पंख से उड़ने वाला ।।

रचना
सुषमा त्रिपाठी (स० अ०)
कंपोजिट उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर) गोरखपुर

13/10/2025

सोमवार

बाल साहित्य सृजन

1 कौआ

काँव-काँव करता रहता है,
मन ना किसी के भाता है।
सुबह-सुबह जब छत पर बोले,
अतिथि कोई तब आता है।।

पितृ पक्ष में पूजा जाता,
भोजन घर-घर पाता है।
चोंच मारकर सिर में अक्सर,
यह फुर्र से उड़ जाता है।।

रचना-
बृजराज सारस्वत(इं०प्र०अ०)
क० वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

2 कोयल

कोयल रंग में काली है,
कुहू-कुहू करने वाली है।
मीठा-मीठा गाना गाती,
सबके मन को वह हर्षाती।।

खुद घोंसला नहीं बनाती,
दूसरे के घोसले में अंडा देती।
जब भी उसको भूख लगती है,
कीट-पतंगों को खाती।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०- निवाड़ा
बागपत, बागपत

3 गिद्ध

गिद्ध बड़ा एक पक्षी होता,
पर्यावरण साफ करता।
खाता है वह मृत पशुओं को,
नभ में मँड़राता रहता।।

बीमारियाँ दूर यों होतीं,
पोषक तत्व मृदा में डाल।
जल स्रोतों को दूषितता से,
दूर रखे, ये प्रकृति का भाल।।

रचना-
जुगल किशोर त्रिपाठी (शि०मि०)
प्रा० वि०- बम्हौरी
मऊरानीपुर, झाँसी

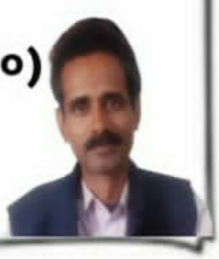

4 बाज

बाज एक शिकारी पक्षी,
गरुड़ से छोटा होता।
हॉक कहते अंग्रेजी में,
एक नाम फाल्कन होता।।

तेज गति के लिए जानते,
रखता है नजर पैनी।
मांसाहारी होता है यह,
बात यही थी कहनी।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

14.10.2025 मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1 नीलकण्ठ

नीले, कण्ठ वाला पंछी,
बहुत ही सुन्दर लगता है।
दर्शन इसका मिलना शुभ,
दशहरे के दिन भी होता है।।

चमकदार नीली-बैंगनी,
गर्दन, सिर भूरे रंग का।
घर पर आना शुभ मानते,
प्रतीक रुप में शिवजी का।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

2 बत्तख

रंग-बिरंगी बत्तख दिखती,
जल-थल दोनों में है रहती।
हंस से छोटे आकार में होती,
छोटी गर्दन में सुन्दर लगती।।

पक्षी विज्ञान में 'मुर्गी' कहाती,
मीठे-खरे सागर में पायी जाती।
उभयचर जन्तु में है आती,
नदी-तालाबों की शोभा बढ़ाती।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि०- राजपुर
मथुरा-मथुरा

3 गिद्ध

गिद्ध की उड़ान में शक्ति,
तीक्ष्ण-दृष्टि में गहराई,
अपने शिकार ढूँढने में,
रखता है चतुराई।।

पर्यावरण में गिद्ध,
की है महत्वता,
मृत जीवों को निपटाने में,
भी रखता है भूमिका।।

रचना-
प्रियंका गौतम (स०अ०)
संवि० वि० क०- एत्मादपुर
एत्मादपुर, आगरा

4 उल्लू

पूरी गर्दन यह घुमाता,
रात को साफ देख पाता।
जरा सी आहत जो पहचानें,
उसे उल्लू के जैसे हम जानें।।

आँखें इसकी गोल-मटोल,
फुफ-वुफ होते इसके बोल।
इसको शुभ माना है जाता,
पूरे विश्व में यह पाया जाता।।

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

15/10/2025 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

उल्लू

रात्रिचर प्राणी कहलाता,
दिन मे यह सोता रहता।
रात को शिकार यह करता,
मनुष्य से यह खूब डरता।।

माता लक्ष्मी का वाहन होता,
स्वभाव का यह सीधा होता।
उजाले मे यह देख ना पाता,
रात मे यह खूब उड़ा करता।।

रचना
इला सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय
पनेरूवा, अमौली, फतेहपुर

2

बाज़

बाज एक शिकारी पक्षी होता,
तीक्ष्ण दृष्टि,साहस,धैर्य गुणों से भरा होता।
ऊंची उड़ान है भरता,
शिकार पर अपने केंद्रित रहता।।

घास के खुले मैदान में रहता,
मांसाहारी भोजन करता,
विष्णु भगवान का वाहन कहलाता,
प्रजाति अपनी में सबसे ज्यादा उम्र जी पाता।।

रचना
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,मेरठ

3

गिद्ध

झुण्डों में गिद्ध रहते,
ऊंचे पेड़ों पर रहते।
दृष्टि से यह तेज होते,
शिकारी पक्षी माने जाते।।

मृत पशुओं को यह खाते,
मुर्दाखोर पक्षी माने जाते।
प्राकृतिक सफाईकर्मी होते,
बीमारी को फैलने से रोकते।।

रचना
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा,कानपुर देहात

4

चील

सबसे बड़ा शिकारी पक्षी,
ऊंची पहाड़ी पर घर बनाता।
गर्म इलाके में इसका बसेरा,
कई रंगों में पाया जाता।।

गर्म इलाके में इसका बसेरा,
मांस खाकर डाले डेरा।
आंखों में इसकी इतनी तेज,
दूर से ही भांप लेती संकेत।।

रचना
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ०प्रा०वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

17/10/2025 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 शुतुरमुर्ग

विश्व का सबसे बड़ा पक्षी शुतुरमुर्ग,
तेज दौड़ता है, उड़ता नहीं शुतुरमुर्ग।
साठ से डेढ़ सौ किलोग्राम वजन व,
नौ फीट ऊँचा होता है शुतुरमुर्ग।।

सत्तर साल तक जी लेता है शुतुरमुर्ग,
एक बार में 7-10 अंडे देती शुतुरमुर्ग।
दाँत नहीं हैं इसके,रोज पत्थर खाकर,
पेट में घास, कीड़े पीस लेता है शुतुरमुर्ग।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2 गिद्ध

शक्तिशाली चोंच वाला,
गिद्ध एक खास पक्षी है।
पोषक तत्त्वों के चक्रण में,
खास भूमिका निभाते हैं।।

बिना पंख को फड़फड़ाये,
बहुत लम्बी उड़ान भरता है।
मजबूत पाचन तंत्र वाला ये,
24 साल जीवित रहता है।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3 मोर

रिमझिम बारिश के मौसम में,
केका केका चिल्लाता मोर।
धानी पंखों को फैलाकर,
सुन्दर नाच दिखाता मोर।।

पक्षियों में सबसे सुंदर पक्षी,
माना जाता है मोर।
हमारे देश का राष्ट्रीय पक्षी,
कहलाता है सुन्दर मोर।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4 कोयल

कोयल की होती,
मधुर आवाज।
होती है बहुत चतुर,
और चालाक।।

शर्मीला होता स्वभाव,
कीड़े-मकोड़े खाती है।
एशिया अफ्रीका महाद्वीप में,
विशेष रूप से पाई जाती है।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

18/10/2025 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1 चकोर

शुष्क पहाड़ी स्थानों में रहता,
चक-चक की आवाज लगाता।
प्रेम सोभाग्य का प्रतीक पक्षी,
चकोर चांद का दीदार करता।।
रंगीन भूरे सफेद रंग के पंख,
काली सफेद धारीदार पंख।
पाकिस्तान का राष्ट्रीय पक्षी,
तेज दौड़ने वाला है पक्षी।।

रचना
सुमन पाण्डेय प्र.अ
प्रा.वि.टिकरी-मनौटी
खजुहा,फतेहपुर

2 शुतुरमुर्ग

बड़ा अनोखा शुतुरमुर्ग,
सबके मन को भाता है।
सभी पक्षियों में बहुत बड़ा,
नर-मादा काले-भूरे रंग का होता है।
बड़ी खास बात है इसमें,
बहुत बड़ा अंडा देता है।
शाकाहारी यह पक्षी है,
उड़ने में अक्षम होता है।।

रचना
प्रतिमा उमराव स अ
कम्पोजिट विद्यालय अमौली
अमौली, फतेहपुर

3 गुंजन पक्षी

पंखों में संगीत बसाए,
जब वह सुरों में बहता।
प्रकृति खुद को भूल जाए,
उसका स्वर यह कहता।।
हमिंग बर्ड है गुंजन पक्षी,
अमेरिका का मूल निवासी।
फूलों के रस को लेता है,
जीवन मे सुर भर देता है।।

रचना
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी (1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4 बटेर

बटेर उड़े ना पंख पसार
सीमित है इसका संसार।
भूमि पर घोंसला बनाता,
भूमि से है इसका नाता।।
कई प्रजाति है बटेर की,
भारत में पुश बटेर है मिलती।
सस्ता और स्वादिष्ट है मांस,
संख्या घट रही है बटेर की।।

रचना
सुषमा त्रिपाठी (स० अ०)
कंपोजिट उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर),गोरखपुर

20-10-2025 सोमवार

बाल साहित्य सृजन

1 नीलकण्ठ

रोलर वर्ग का पक्षी,
शुभ पक्षी कहा गया।
दिखाई अब कम देता है,
लुप्त प्रायः अब हो गया।।

दशहरे पर नीलकण्ठ का दर्शन,
फल देता है बहुत ही शुभ।
महादेव का नाम मिला इसे,
सुन्दर लगता है बहुत शुभ।।

रचना
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

2 फाख्ता

फाख्ता एक पक्षी प्यारा,
सारे जग से लगता न्यारा।
कबूतर के परिवार का प्राणी,
अजीब होती इसकी वाणी।।

बीज, अनाज और कीड़े खाता,
बहुत अधिक यह उड़ ना पाता।
सभी जगह यह मिलता है,
सबको प्यारा लगता है।।

रचना
बृजराज सारस्वत (इं०प्र०अ०)
कम्पोजिट वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

3 बत्तख

सफेद रंग की बत्तख,
सबके मन को भाती है।
लाल चोंच वाली सुन्दर,
दाना चुगने आती है।।

पानी में तैरना भाये,
घर में पाली जाती।
बच्चों को पसन्द आती,
ब्रह्मा जी का वाहन होती।।

रचना
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० कूँड
करहल, मैनपुरी

4 गौरैया

कोई दिन नहीं जाता था,
जब तुम नजर ना आती थी।
पहले तो फुदक-फुदक कर,
घर आँगन चहकाती थी।।

अब कहाँ छुपकर बैठी हो,
हमको नजर ना आती हो।
दाना डाले हम नित तुमको,
गौरैया! खाने नहीं आती हो।।

रचना
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० निवाड़ा
बागपत, बागपत

21.10.2025 मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1 सारस

सुन्दर सा भारी पक्षी है,
आसमान में उड़ आता।
तालाब, झील के पास में रहता,
सारस शाकाहारी कहलाता।।

नर-मादा का प्रेम अनूठा,
एक-दूसरे बिन रह न पाते।
अगर एक की मृत्यु हो जाती,
दूजा वियोग में प्राण त्याग दे।।

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

2 हंस

सुन्दर, शान्त, गर्दन लम्बी,
स्वभाव पवित्र, विवेकी होता।
दूध-पानी अलग करने का,
गुण इसमें माना जाता।।

सरस्वती का वाहन है यह,
दर्शन शुभ, जलीय पौधे खाता।
शांत झील या समुद्र में मिले।
जोड़े में अक्सर पाया जाता।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

3 बगुला

लम्बी गर्दन वाला बगुला,
सफेद रंग का होता।
एक पैर पर खड़ा होकर के,
जल में ध्यान लगाता।।

धैर्य, एकाग्रता और संयम,
बच्चो! बगुला सीखता।
दृढ़-निश्चय का उत्तम उदाहरण,
बगुला प्रस्तुत करता।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० विद्यालय- राजपुर
मथुरा, मथुरा

4 शुतुरमुर्ग

शुतुरमुर्ग पक्षी है होता,
दुनिया का सबसे भारी।
नर के पंख श्वेत होते हैं,
त्वचा कुछ नीली-काली।।

मादाओं का रंग एक सा,
पंख त्वचा सब भूरी।
उड़ जाते हैं निज पंखों से,
नौ-फिट तक ऊँची दूरी।।

रचना-
प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)
के०जी०बी०- नगर क्षेत्र
नगरक्षेत्र, कासगंज

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · मिशन शिक्षण संवाद · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

23/10/2025 गुरुवार

बाल साहित्य सृजन

1 मुर्गा

मुर्गा होता एक ऐसा पंछी,
जिसके सिर पर कलगी सजती।
होता रंग-बिरंगे पंखों वाला,
झाबुआ में होता ये काला।।

सुबह सवेरे जल्दी उठ जाता,
फिर सबको दे बांग उठाता।
व्यवसाय करने के लिये,
इनको फार्मों में पाला जाता।।

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2 शुतुरमुर्ग

विश्व का सबसे बड़ा पक्षी शुतुरमुर्ग,
दक्षिण अफ्रीका का निवासी है।
लंबी गर्दन, लंबे पैर वाला,
यह पक्षी शाकाहारी है॥

खतरा महसूस होने पर यह है,
70 कि०/घंटा की रफ्तार से चलता है।
अन्य पक्षियों की तुलना में,
इसका अण्डा सबसे बड़ा होता है॥

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3 सारस

लम्बी टांग और लम्बा गला है पहचान,
विश्व में सबसे विशाल जिसकी उड़ान।
सारस है वो पक्षी क्रौंच भी जिसे कहते,
गर्दन और सिर पर लाल रंग का निशान।।

ग्रस एंटीगोन है इसका वैज्ञानिक नाम,
जीवनसाथी के साथ रहना इनका काम।
उत्तर प्रदेश का राजकीय पक्षी है सारस,
भावनाओं को व्यक्त करे सुबह हो या शाम।।

पारुल चौधरी (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4 बाज

तेज जिसकी उड़ान है,
गति से दिशा बदलने काम है।
चीते सी रफ्तार है उसकी,
दुनिया देती 'बाज़' नाम है।।

मांसाहारी पक्षी है बाज़ ,
13 से 23 इंच होती लंबाई खास।
पंख 29-47 इंच होते बड़े-बड़े,
6 से 8 घंटे हवा में घूमते बाज़

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

24/10/2025 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 हंस

देवी सरस्वती का वाहन है हंस,
ज्ञान व पवित्रता का प्रतीक हंस,
जल के किनारे कम गहराई में,
घास,शैवाल,कीड़े खाते हैं हंस।।

पानी और दूध को अलग करने,
की क्षमता रखते हैं हंस।
नर व मादा हंस जीवन भर
एक जोड़ा बनाकर रहते हैं हंस।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2 नीलकण्ठ

मैना के बराबर आकार का,
नीलकण्ठ पक्षी होता है।
नीले लाल भूरे रंग का,
यह सुन्दर पक्षी होता है।।

दशहरे के महापर्व पर,
इसे देखना शुभ माना जाता।
बुराई पर अच्छाई की जीत का,
प्रतीक यह पक्षी माना जाता।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3 सारस

एक विशाल उड़ने वाला,
पक्षी कहलाता है सारस।
उत्तर प्रदेश का राजकीय पक्षी,
माना जाता है सारस।।

अटूट प्रेम और समर्पण का,
प्रतीक माना जाता है सारस।
एक विशाल ऊँचाई पर उड़ने,
वाला पक्षी कहलाता है सारस।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4 गौरैया

भूरे, स्लेटी रंग की गौरैया,
गले पर काला धब्बा पाया जाता है।
छोटी चोंच, होती मजबूत,
हाउस स्पैरो कहा जाता है।।

किसानों के लिए फायदेमंद,
अनाज, कीड़े-मकोड़े खाती है।
झुंड में रहती, उडती फिरती,
सामाजिक पक्षी कहलाती है।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

25/10/2025 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1 डोडो

विलुप्त हो गया पक्षी डोडो,
मारीशस का पक्षी था डोडो।
पक्षी होते हुए भी थलचर,
उड़ान ना भर पाता था डोडो।।
मानव शिकार से हुआ विलुप्त,
शाकाहारी पक्षी फल निर्भर।
मारीशस के राष्ट्रीय चिन्ह में,
दिखता डोडो पक्षी विलुप्त।।

रचना
सुमन पाण्डेय प्र.अ
प्रा.वि.टिकरी-मनौटी
खजुहा,फतेहपुर

2 गरुड़

विष्णु का वाहन है,
तेज गति से उड़ता है।
स्वतंत्र निर्भीक होकर,
बादलों को चीरता है।।
स्वर्णिम पंख फैलाए,
उड़ान अत्यंत ऊँची है।
गरुड़ के पंखों में,
बसती अनन्त शक्ति है।।

रचना
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी (1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

3 गौरैया

भूरे रंग की होती गौरया,
घोंसला घरों में बनाती है।
पैसर वंश की पक्षी है,
विश्व भर में पायी जाती है।।
आकार में छोटी और फुर्तीली,
फुदक-फुदक कर उड़ती है।
बीज, अनाज और कीड़े खाकर,
नर-मादा रूप में मिलती है।।

रचना
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय अमौली
अमौली, फतेहपुर

4 बुलबुल

बुलबुल पक्षी बड़ा लड़ाकू,
पतली गर्दन बड़ा ही बाकू।
भूरा काला रंग है इनका,
चुन लेते ये तिनका-तिनका।।
कीड़े-मकोड़े इनका आहार,
गाते रहते नर पंख पसार।
इनको भाता खुला आसमान,
कुर्बानी भावना इनमें प्रधान।।

रचना
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
कंपोजिट उ० प्रा० वि० खजनी
(रुद्रपुर), गोरखपुर

27/10/2025

सोमवार

बाल साहित्य सृजन

1 कबूतर

कबूतर शान्ति का वाहक,
पंखो वाला प्यारा पक्षी,
प्रेम का प्रतीक होता,
सबका प्यारा यह पक्षी।।

अंग्रेजी में पिजन कहते,
होता है वफादार यह।
दिशाओं को याद रखता,
संदेश वाहक होता यह।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

2 शुतुरमुर्ग

लम्बी गर्दन लम्बे पैर,
शुतुरमुर्ग की यह पहचान।
विशालकाय यह पक्षी है,
अलग ही है इसकी शान।

पृथ्वी पर ही रहता है,
अधिक नहीं उड़ पाता है।
बहुत तेज यह दौड़ लगाता,
शिकारी इसे पकड़ ना पाता।।

रचना-
बृजराज सारस्वत(इं०प्र०अ०)
क० वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

3 उल्लू

पक्षियों में एक ऐसा पक्षी,
इन्सानों जैसी आँखें जिसकी।
सर बड़ा इसका होता,
रात में जागे दिन में सोता।।

एक पंजा उल्टा इसका,
सर चारों ओर घूमाता।
सुनता यह बहुत तेज है,
नाम इसका उल्लू कहलाता।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०- निवाड़ा
बागपत, बागपत

4 मैंना

एक दक्षिण एशियाई पक्षी,
नाम है जिसका मैंना।
कई देशों में पाई जाती,
सुन्दरता का क्या कहना।।

झुण्ड बना कर रहते हैं,
आक्रामक हो मचाते शोर।
पैर और चोंच होती पीली,
कौए से ये रहते हैं दूर।।

रचना-
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० कूँड़
करहल, मैनपुरी

28.10.2025 मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1 मोरनी

मन्द-मन्द पग धरे मोरनी,
सब के मन को हरे मोरनी।
बादल देखे, नये मयूरा,
केऊं-केऊं करे मोरनी।।

सुन्दर पंख, चाल मोहिनी,
करती खूब कमाल मोरनी।
मस्त मयूरी नाचती रहती,
करती खूब धमाल मोरनी।।

रचना-
प्रवीणा दीक्षित (स०अ०)
के०जी०बी०- नगर क्षेत्र
नगरक्षेत्र, कासगंज

2 मैना

झुण्डों में रहती है मैना,
सुन्दरता का क्या ही कहना?
इसको पसन्द जंगल में रहना,
इसे चित्रलोचना भी कहना।।

यह सबकी हट नकल उतारे,
झगड़ालू पक्षी कहते इसे सारे।
मैना को बुद्धिमान सब मानें,
पैर और अपनी चोंच यह मारे।।

रचना-
शहनाज बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

3 कौवी

कौवी काले रंग की होती,
काँव-काँव जो करती।
छोटे जानवर, पौधे खाती,
सर्वाहारी कहलाती।।

कौवे की अपेक्षा कौवी,
अधिक बुद्धिमान होती।
कर्कश आवाज वो करती,
जगह-जगह पर देखी जाती।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्रा० विद्यालय- राजपुर
मथुरा, मथुरा

4 कोयल

काली पूरी कोयल है,
कूह-कूह मीठी बोल रही।
छिपकर रहती पत्तों में,
डाल-डाल पर डोल रही।।

पंख बड़े काले-काले,
आम के बौर को चुगती है।
अपना घौंसला नहीं बनाती,
अण्डे दूसरों के घौंसले में देती है।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

30/10/2025 गुरुवार

बाल साहित्य सृजन

1 बगुला

समन्दर और नदी किनारे,
पाये जाते पंछी प्यारे।
लम्बी टांगें, लम्बी गर्दन वाले,
बगुले होते दोस्त हमारे।।

चालाकी से पकड़े मछली,
भूरा, नीला, काला होता।
ऊंची जगह पर बनाते घोंसले,
15 साल तक ये जीता।।

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2 बुलबुल रानी

बुलबुल रानी बुलबुल रानी,
तुम इतनी क्यों प्यारी हो।
मधुर-मधुर से गीत सुना कर,
तुम सबको लुभाती हो॥

रंग बिरंगी दिखती हो तुम,
खूब उछल कूद मचाती हो।
इतना सुंदर गाती हो की सिंगिंग बर्ड,
के नाम से जानी जाती हो॥

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3 उल्लू

धन की देवी लक्ष्मी का वाहन,
आँखें है उसकी बड़ी-बड़ी।
दिन से स्पष्ट रात में दिखता,
गर्दन घूमे पूरी घड़ी-घड़ी।।

धन और समृद्धि का प्रतीक,
कहलाता है उल्लू बुद्धिमान।
शुभ होता उल्लू का दिखना,
सुबह सुबह या यात्रा दौरान।।

पारुल चौधरी (स·अ·)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4 सारस

समूह और जोड़े में,
रहना इसको भाता है।
आर्द्रभूमि में यह रहते,
साथी का साथ निभाता है।

एक लम्बा, भारी पक्षी होता,
धूसर रंग के पंख संग उड़ता है।
लम्बी टांगों वाला 'सारस',
एक मांसाहारी पक्षी होता है।।

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

31/10/2025 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 कठफोड़वा

तीखी, मजबूत चोंच, कड़ी पूँछ,
लंबी जीभ रखता है कठफोड़वा।
जंगलों व वनों में मृत लकड़ियों,
पर घोंसला बनाता है कठफोड़वा।।

ऑस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड को छोड़,
हर जगह पाया जाता है कठफोड़वा।
पेड़ों में छेद करके कीड़े मकोड़े,
निकालकर खाता है कठफोड़वा।।

पूनम नैन (स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2 हंस

जलपक्षी परिवार में से,
हंस एक सुन्दर बड़ा पक्षी है।
लम्बी और घुमावदार गर्दन,
इनकी पहचान होती है।।

शान्त स्वभाव का यह पक्षी,
मुख्यतः सफेद रंग का होता है।
स्वच्छता पवित्रता के रूप में,
यह पक्षी सबसे अलग होता है।।

अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3 तोता

तोता मेरा सबसे प्यारा,
हरा रंग उसका न्यारा।
चोंच होती लाल-लाल,
सबको बाती उसकी चाल।।

ताजे-ताजे फलों को खाता,
मिट्ठू-मिट्ठू यह चिल्लाता।
पंखों को अपने फैलाकर,
नील गगन की सैर कर आता।।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4 उल्लू

गोल-गोल, बड़ी-बड़ी आँख,
चोंच मजबूत, मुड़ी हुई होती है।
चपटा चेहरा, मुलायम बाल,
सुनने की उत्कृष्ट क्षमता होती है।

रात्रिचर शिकारी पक्षी होते है,
गर्दन को 270C तक घुमाते है।
हिंदू धर्म की मान्यतानुसार,
माँ लक्ष्मी के वाहन कहलाते है।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

रचनाकारों की सूची

1- बृजराज सारस्वत, मथुरा
2- भावना शर्मा, मेरठ
3- शालिनी, मैनपुरी
4- सीमा शर्मा, बागपत
5- नैमिष शर्मा, मथुरा
6- उमा ठाकुर, मथुरा
7- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
8- प्रबीणा दीक्षित, कासगंज
9- आरती यादव, कानपुर देहात
10- इला सिंह, फतेहपुर
11- नीलम भास्कर, बागपत
12- माला सिंह, मेरठ
13- पारुल चौधरी, बागपत
14- वन्दना यादव, जौनपुर
15- शिप्रा सिंह, फतेहपुर
16- ज्योति सागर, बागपत
17- पूनम नैन, बागपत
18- अमित गोयल, बागपत
19- अनुप्रिया यादव, फतेहपुर
20- मृदुला वर्मा, कानपुर देहात
21- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
22- सुमन पाण्डेय, फतेहपुर
23- सुषमा त्रिपाठी, गोरखपुर
24- रूपी त्रिपाठी, कानपुर देहात

तकनीकी सहयोग

1- नैमिष शर्मा, मथुरा
2- जितेन्द्र कुमार, बागपत

मार्गदर्शन- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलन :- काव्यांजलि दैनिक सृजन टीम